।। कोबातीर्थमंडन श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

।। अनंतलब्धिनिधान श्री गौतमस्वामिने नमः ।। ।। गणधर भगवंत श्री सुधर्मास्वामिने नमः ।।

।। योगनिष्ठ आचार्य श्रीमद् बुद्धिसागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।। ।। चारित्रचूडामणि आचार्य श्रीमद् कैलाससागरसूरीश्वरेभ्यो नमः ।।

आचार्य श्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर

पुनितप्रेरणा व आशीर्वाद

राष्ट्रसंत श्रुतोद्धारक आचार्यदेव श्रीमत् पद्मसागरसूरीश्वरजी म. सा.

जैन मुद्रित ग्रंथ स्केनिंग प्रकल्प

ग्रंथांक : १

श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
कोबा, गांधीनगर-३८२००७ (गुजरात)
(079) 23276252, 23276204
फेक्स : 23276249
Websiet : www.kobatirth.org
Email : Kendra@kobatirth.org

शहर शाखा

आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
शहर शाखा
आचार्यश्री कैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
त्रण बंगला, टोलकनगर
परिवार डाइनिंग हॉल की गली में
पालडी, अहमदाबाद – ३८०००७
(079) 26582355

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अथ

नीतिसंग्रहः

बहुपुस्तकेभ्यः

दुर्गाप्रसादेन

संस्कृतभाषाप्रचारार्थं

संकलितः

विरजानन्द-यंत्रालये मुद्रितश्च

लैाहार

प्रथमवार १००० । १९१२ ई० । मूल्य ।)

नम्र सूचन
इस ग्रन्थ के अभ्यास का कार्य पूर्ण होते ही नियत समयावधि में शीघ्र वापस करने की कृपा करें. जिससे अन्य वाचकगण इसका उपयोग कर सकें.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

AT

Virjanand Press, Lahd

FOR SALE

BOOKS	Rs.	A.	P.
Religion of the Future by Col. Ingersoll	0	1	0
Why I am a Vegetarian	0	0	6
Principles of Religion	0	4	0
Sacred Songs	0	1	0
Intemperance	0	1	0
Manu & Vegetarianism	0	0	6
Prashna Upanishat ...	0	2	0
Chanikya Morals with Sanscrit text ...	0	4	0
Shraddha	0	0	3
Poetical Reader ...	0	1	0
Doctrine of Re-incarnation	0	1	0
Vegetarianism	0	0	3
Five Great Duties ...	0	4	0
Vedic Text No. 1 ..	0	0	6
„ „ 2 ...	0	0	6
Reply to Mr Agnihotri	0	1	0

BOOKS	Rs.
English readers nos. 2, 3,4 & Poetical Reader bound	0 6
English Satyarth Prakash with Sawami Dayanand's life and photo cloth bound	2 0
Niti Shatak English	0 1
Vairaga Shatak „ ...	0 1
Kena Upanishat ...	0 1
Who wrote the Puranas ?	0 0
War is Hell by Dr. Peebles M. A.,M.D.	0 1
The Way to God ...	0 1
Realities of Inner life	0 1
Terminology of Vedas	0 2
Dr. J. Oldfield's diet of the Furture ...	0

POSTAGE EXTRA.

Apply to the MANAGE

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

॥ ओम् ॥

नीतिसंग्रहः

यावत् स्वस्थो ह्ययं देहो यावन्न मृत्युश्च दूरतः ।
तावद् आत्महितं कुर्यात् प्राणान्ते किं करिष्यति॥

जब तक यह बदन तंदुरस्त है और जब तक मोत दूर है तब तक अपनी भलाई कर लो मरने के पास पहुचने पर क्या कर सको गे

A man should do good to his soul so long as the body is healthy and death is far. What will he do at the end of life ?

एकेनापि सुपुत्रेण विद्यायुक्तेन साधुना ।
आल्हादितं कुलं सर्वं यथा चन्द्रेण शर्वरी ॥

पढेहुए और सुशील एक हि पुत्र से तमाम घराना खुश रहता है जैसी एक चांद से रात रोशन हो जाती है

The whole family is made happy by one good son only, learned and virtuous, as the night is made delightful by the moon.

संतोषस् त्रिषु कर्तव्यः स्वदारे भोजने धने ।
त्रिषु चैव न कर्तव्यो ऽध्ययने जपदानयोः ॥

तीन में संतोष करना चाहिये अर्थात् अपनी स्त्री भोजन और धन में और तीन में न करना चाहिए अर्थात् पढने जप और दान में

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Contentment in three things is commendable, viz., the wlfe, food and wealth. It is not commendable in three others, viz., study, prayer and charity.

बृद्धकाले मृता भार्या परहस्तगतं धनम् ।
भोजनं च पराधीनं सिस्रः पुसां विडंबनाः ॥

बुढापे में स्त्री का मर जाना धन का दूसरों के हाथ में पड जाना रोटी दूसरों के भरोसे मिलना यह तीन मनुष्य की आफतें वा खुआरिआं हैं

Men's troubles are three, the dying of the wife in old age, passing away of money into the hands of others, and dependence on others for food.

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम् ।
लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणं किं करिष्यति ॥

जिस में खुद अकल नहि उसके लिये किताब वे फायदा है जैसे आंखें न होने से आरसी कुछ काम नहि देती

A book does him no good who has no sense in himself. What service will a mirror do him who is destitute of the eyes ?

जलबिंदु निपातेन क्रमशः पूर्यते घटः ।
स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च ॥

पानी का कतरा टपकते २ घडा भर जाता है यही हाल विद्या धर्म और धन का है

A pitcher is filled by drops of water falling regularly. The case of all kinds of knowledge, religion and wealth is the same, (that is, success in them requires steadiness in practice.) SLOW AND STEADY WINS THE RACE.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दानेन पाणिर् न तु कंकणेन
स्नानेन शुद्धिर् न तु चंदनेन ।
मानेन तृप्तिर् न तु भोजनेन
ज्ञानेन मुक्तिर् न तु मंडनेन ॥

खैरात करने से हाथ खूबसूरत लगता है न कि चूडा पिहनने से नहाने से सफाई होती है न कि चन्दन लगाने से इज़्ज़त होने से खुशी होती है न कि भोजन करने से इल्म से नजात होती है न कि आरायश से

Charity decorates the hand, but not a bracelet ; a bath effects purity, but a not daub of sandal paste ; honor gives satisfaction, but not food ; salvation results from wisdom, but not from decoration or externalism.

पुरः साधुवद् भाति मिथ्या विनीतः
परोक्षे करोत्यर्थनाशं हताशः ।
सदा दुष्टकार्ये लगेद् यस्य चित्तं
त्यजेत् तादृशं दुश्चरित्रं कुमित्रम् ॥

जो सामने भले मानस के समान दिखलाई देता है पीछे भलाई का नाश करता है, और जिसका मन सदा बुराई में लगता है, ऐसे बुरे काम वाले खराब दोस्त को छोड देना चाहिए

Leave such a bad friend of evil acts that being falsely polite appears like a saint before your face, and being devoid of good does harm to your interest, and whose mind is always bent on wicked work.

स्वभावो नोपदेशेन शक्यते कर्तुमन्यथा ।
सुतप्तमपि पानीयं पुनर्गच्छति शीतताम् ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिखलाने से स्वभाव के विरुद्ध नहि हो सकता खूब गर्म किया हुआ पानी फिर ठंडा हो जाता है

One's nature can not be changed by advice, even well-heated water again becomes cold.

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मीः
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति ।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिध्यति को ऽत्र दोषः ॥

मिहनती बहादुर आदमी को दौलत मिलती है छोटे लोग नसीब नसीब पुकारते हैं नसीब का कुछ ख्याल न करके अपनी ताकत भर हिम्मत करो, अगर जतन करने पर काम न हो तो कोई बुरा नहि कहता

Wealth comes to the lion-like energetic man. Small men always talk of fate and fate only. Leaving off the talk of fate, do your best with courage. There will be no fault if a work is not done on means being used to do it.

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सिंहस्य सुप्तस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥

कोशिस करने से हि काम होता है न कि सिर्फ सोचने से सोए हुए शेर के मुंह में हिरण नहि जा पडते

Works are done by exertion only, and not by simply wishing ; for, deer don't enter the mouth of a sleeping lion.

यस्य क्षेत्रं नदीतीरे भार्या च परसंगता ।
ससर्पे च गृहे वासः कथं स्यात् तस्यनिर्वृतिः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसका खेत दरिया कनारे है स्त्री दूसरे की संगत करती है सांप वाले घर में रिहायश है उसको चैन कहां

How can he be at ease whose field is on the banks of a river, whose wife associates with another man, and whose residence is in a serpented house?

उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः ।
अपकारिषु यः साधुः स साधुः सद्भिरुच्यते ॥

जो नेकी करने वालों के साथ नेक रहता है उसकी नेकी की क्या तारीफ है । जो बुराई करने वालों के साथ नेकी करता है उसी को भले लोग नेक कहते हैं

What merit is there in his goodness, who is good to those who have done him good? He is called good by the virtuous, who is good to them that have done him evil.

यथैकेन न हस्तेन तालिका संप्रपद्यते ।
तथोद्यमपरित्यक्तं न फलं कर्मणः स्मृतम् ॥

जैसे एक हाथ से ताली नहि बजती उसी प्रकार उद्यम के छोडने से काम का फल नहि होता

As a clap is not produced with one hand, so no fruit of action accrues to him who has given up work.

पश्य कर्मवशात् प्राप्तं भोज्यकाले ऽपि भोजनम् ।
हस्तोद्यमं विना वक्त्रे प्रविशेन्न कथंचन ॥

कर्म करने से भोजन के समय पर भोजन मिलता है हाथ के उद्यम विना भोजन मुह में नहि जाता

See, even the food served, from its dependence upon action, at the time of eating never enters the mouth without the effort of hands.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सुहृद्भिरासैरसकृद् विचारितं
स्वयं च बुध्या प्रविचारिताश्रयम् ।
करोति कार्यं खलु यः स बुद्धिमान्
स एव लक्ष्म्या यशसां च भाजनम् ॥

पढे लिखे नेक दोस्तों के साथ अथवा अपनी बुद्धि से सोच कर जो शीघ्र काम करता है यह अकलमंद होता है उसको हि दौलत और नामवरी मिलती है

Surely he is wise who at once does a work which is well thought of by learned friends and thoroughly considered by one's own intellect, and who alone well deserves wealth and fame.

वलीयसा हीनबलो विरोधं
न भूतिकामो मनसापि वांछेत् ।
न वध्यते ऽत्यन्तवलो हि यस्मात्
व्यक्तं प्रणाशो ऽस्ति पतंगवृत्तेः ॥

कमजोर आदमी अपनी भलाई चाहने वाला ज़ोरावर से झगडे का विचार न करे क्यों कि वह रुकता नहि इस लिये नाश जाहिर है जैसे दीपक में भिनगे का

A weak man desirous of prosperity should never even in mind think of a quarrel with a powerful man; for, the powerful is not suppressed; so his ruin is certain like that of a mosquito (before a lamp).

काके शौचं द्यूतकारे च सत्यं
क्लीवे धैर्यं मद्यपे तत्त्वचिन्ता ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सर्पे शान्तिः करुणा मांसभुक्षु
राजा मित्रं केन दृष्टं श्रुतं वा ॥

कौवा में शुद्धि जुआरी में सचाई नामर्द में धीरज शराब पीने हारे में विचार सांप में क्षमा मांस खाने हारों में दया राजा को मित्र किस ने देखा या सुना

Who has seen or heard purity in a crow, veracity in a gambler, forbearance in a coward, philosophic thinking in a drunkard, calmness in a serpent, compassion in flesh-eaters, a prince be a friend?

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये ।
पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम् ॥

मूर्खों को उपदेश करने से फिसाद होता है शान्ति नहि, सांप को दूध पिलाने से सिर्फ जिहर बढता है

Monition produces anger, but not peace of the ignorant; milk drink of serpents increases their venom.

तावत् प्रीतिर्भवेल् लोके यावद् दानं प्रदीयते ।
वत्सः क्षरिक्षयं दृष्ट्वा परित्यजति मातरम् ॥

दुनियां में मुहब्बत तब तक रहती है जब तक दान दिया जाता है दूध का बंद होना देख कर बच्छा मां को छोड़ देता है

Men's friendship lasts as long as something is given them. A calf finding milk cease leaves off the mother.

आयुः कर्म च वित्तं च विद्या निधनमेव च ।
पंचैतानि हि सृज्यन्ते गर्भस्थस्यैव देहिनः ॥

उमर करतूत दौलत इल्म मौत ये पांच हमल में हि मुकर्रर कर दिये जाते हैं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Man's five (qualities), viz., age, work, wealth, knowledge, and death, are ordained when in the womb.

अग्निहोत्रफला वेदाः शीलवृत्तफलं श्रुतं ।
रतिपुत्रफला दारा दत्तमुक्तफलं धनम् ॥

वेदों का फल अग्नि होत्र आदि यज्ञ हैं, तजरबे का फल अच्छा अखलाक होना है, स्त्री का फल सुख और लड़के होना है और धन का फल देना और भोग करना है

Fire sacrifice is the fruit of (the study of) the Vedas, politeness that of experience, pleasure & children that of a wife, and charity and expense that of wealth.

सर्पाः पिवन्ति पवनं न च दुर्बलास्ते
शुष्कैस्तृणैर्वनगजा बलिनो भवन्ति ।
कन्दैः फलैर्मुनिवरा गमयन्ति कालं
सन्तोष एव पुरुषस्य परं निधानम् ॥

सांप हवा पीते हैं और निबल नहि होते। जङ्गल के हाथी सूखे तिनके खाकर बलवान होते हैं। अच्छे मुनि जड़ और फल खाकर काल व्यतीत करते हैं। केवल संतोष नाम सबर हि आदमी का सहारा है।

Serpents live on the air, but they are not weak. Wild elephants grow strong on dry grass. Great sages pass their time of life by means of fruits and roots. Verily, contentment is man's great support.

दानेन तुल्यो निधिरस्ति नान्यो
लोभाच्च नान्योऽस्ति रिपुः पृथिव्याम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

विभूषणं शीलसमं न चान्यत्
संतोषतुल्यं धनमास्ति नान्यत् ।

दान के बराबर दूसरा खजाना नहि है। दुनियां में लालच से बडा कोई बैरी नहि है। सभ्यता से बढकर कोई जेवर नहि है। सबर से अधिक कोई धन नहि है

There is no hoard like charity. There is no other enemy on earth than avarice. There is no jewel like modesty. There is no wealth like contentment.

सुलभाः पुरुषा मित्र सततं प्रियवादिनः ।
अप्रियस्य च पथस्यच वक्ता श्रोता च दुर्लभः ॥

भय दोस्त सदा मीठी बातें बोलने हारे आदमी असानी से मिल जाते हैं और नागवार लाभकारी बात का कहने वाला सुनने वाला मुशकिल से मिलता है

O friend, honey-tongued men are always easily obtainable; but the speaker and the hearer of unpleasant truth and ultimate good are difficult to get.

वृक्षान् छित्वा पशून् हत्वा कृत्वा रुधिरकर्दमम् ।
यद्येवं गम्यते स्वर्गं नरकं केन गम्यते ॥

हरे पेड को काटकर जानवर को मार कर खून बहाकर यदि स्वर्ग को जाते हैं तो नरक को कोन काम करके जाते हैं

If a man goes to heaven by cutting green trees, killing animals, and shedding the blood, by what means does he go to hell ?

मानाद् वा यदि वा लोभाद् अथवा यदि वा भयात् ।
यो न्यायमन्यथा ब्रूते स याति नरकं नरः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जो आदमी इज़्ज़त के वास्ते लोभ से डर से न्याय के विरुद्ध बोलता है वह दोजख को जाता है।

That man goes to hell, who tells a lie or gives a false evidence either from regard to his party, avarice, or from fear.

पतिव्रता पतिप्राणा पत्युः प्रियहिते रता ।
यस्य स्याद् ईदृशी भार्या धन्यः स पुरुषो भुवि ॥

जिस मनुष्य की स्त्री पाकदामन अपने पति पर जान कुरबान करने वाली अपने पति की भलाई में खुश होने वाली है वह दुनियांमें बड़ा नसीववाला है

That man is lucky on earth, whose wife is chaste & devoted to him and takes delight in his welfare.

न गृहं गृहमित्याहुर्गृहणी गृहमुच्यते ।
गृहं हि गृहणीहीनमरण्यसदृशं मतम् ॥

घर को घर नहि कहते घरवाली को घर कहते हैं घरवाली के विना घर जंगल के समान है।

The wise do not call a house a home; the wife is called the home. A house without the wife is thought to be like a wilderness.

दारिद्ररोगदुःखानि बंधनव्यसनानि च ।
आत्मापराधवृक्षस्य फलान्येतानि देहिनाम् ॥

गरीबी बीमारी तकलीफ दुनिया के फंदे शौक आदि आदमी के अपने दोषों के झाड़ के फल हैं।

These are the fruits of the tree of men's own faults —poverty, disease, trouble, attachment and fondness.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परस्परस्य मर्माणि ये न रक्षंति जन्तवः ।
त एव निधनं यान्ति वल्मीकोदरसर्पवत् ॥

जो लोग आपस के भेदों को नहि छिपाते वह बरबाद हो जाते हैं जैसे चींटियों के बिल में सांप

Those men who do not guard one another's secrets, are destroyed like a serpent in an ant-hill.

कुलं च शीलं च सनाथता च
विद्या च वित्तं च वपुर्वयश्च ।
एतान् गुणान् सप्त विचिंत्य देया
कन्या बुधैः शेषम् अचिन्तनीयम् ॥

खानदान अखलाक माळिकपन इल्म दौलत शरीर उमर ये सातगुण विचार कर अकलमन्द को अपनी लडकी बिवाह देना चाहिये बाकी का कुछ ख्याल न करै

The wise should give the daugher in marriage after having well considered these seven qualifications (in the bridegroom),—family, nature (temper), guardianship, knowledge, wealth, health (the body), and age, ; and leave out the rest.

अमित्रं कुरुते मित्रं मित्रं द्वेष्टि हिनस्ति च ।
शुभं वेत्यशुभं पापं भद्रं दैवहतो नरः ॥

उस पर परमेश्वर की मार है जो दोस्त को दुषमन जानता है और दोस्त से दुषमनी करता और उसे सताता है अच्छे को बुरा समझता है और पाप को नेकी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

That man is doomed to destruction who makes friends with an unfriendly person, hates and ruins the friend, thinks good as bad, and vice to be virtue.

सन्तापयन्ति कमपथ्यभुजं न रोगाः
दुर्मंत्रिणं कमुपयान्ति न नीतिदोषाः ।
के श्रीर्न दर्पयति कं न निहन्ति मृत्युः
कं स्वीकृता न विषयाः परिपीडयन्ति ॥

किस बुरे भोजन करने वाले को रोग नहि सताते । किस बुरे सलाहकार वाले राजा को राज्य के दोष नहि लगते । किस को दौलत घमंडी नहि बनाती । किस को मौत नहि आती । किस को शौक की आदत दुःख नहि देती ।

What improperly feeding man do diseases not afflict? What prince with a bad minister do errors in politics not befall? Whose head does fortune not turn? Whom does death not kill? Whom does indulgence in habits of luxury not afflict with pain?

यज् जीवितं क्षणमपि प्रथितं मनुष्यैः
विज्ञानविक्रमयशोभिरभममानैः ।
तन् नाम जीवितमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः
काको ऽपि जीवति चिरं च बलिं च भुंक्ते ॥

जिस जीने को मनुष्य विद्या वीरता नामवरी से विख्यात करते हैं चाहे क्षणभर का क्यों न हो और जिस में मान है उस जीने का नाम जीना है ऐसा जानने वाले कहते हैं वरन कऊआ भी बहुत जीता और भोजन करता है

That is truly a living which is made known by men with learning, valour, and fame, and with continuous honor. It is called life by those who know of it, else the crow, too, lives long and gets food.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अवलस्य वलं राजा वालस्य रुदितं वलं ।
वलं मूर्खस्य मौनत्वं तस्करस्यानृतं वलम् ॥

कमज़ोर का वल राजा है वालक का रोना अपढ का चुप चोर का झूठ

A king is the strength of the weak, weeping that of a child, silence that of the ignorant, and lying that of a thief.

यथा यथा हि पुरुषः शास्त्रं समधिगच्छति ।
तथा तथास्य मेधा स्याद् विज्ञानं चास्य रोचते ॥

जैसा२ आदमी शास्त्र जानता है वैसी वैसी उसकी बुद्धि बढती है और उसे विद्या हि अच्छी लगती है

A man's understanding develops and knowledge pleases him as he studies books or scriptures.

तावद् भयस्य भेतव्यं यावद् भयमनागतम् ।
उत्पन्ने तु भये तीव्रे स्थातव्यं वै ह्यभीतवत् ॥

जव तक डर नहि आया है तव तक उससे डरना चाहिये वडे डर के आजाने पर अडर के सदृश उससे नहि डरना चाहिये

Danger is to be dreaded so long as it is not come. When it is come, it should be faced with undauntedness.

तद् भुज्यते यद् धर्मेण प्राप्यते
स बुद्धिमान् यो न करोति पापम् ।
तत् सौहृदं यत् क्रियते परोक्षे
दंभं विना यः क्रियते स धर्मः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वह खाना चाहिये जो धर्म से मिला है वह। अकलमन्द है जो पाप नहि करता। वह दोसती है जो पीठ पीछे रहती है। वह धर्म है जो विना फरेव के किया जाता है।

That should be eaten which is got onestly. He is wise who does no sin. That is friendsh which lasts in absence. That is religion which is p actised without a fraud.

स्वकार्ये शिथिलो यः स्यात् किमन्ये न भवन्ति हि।
जागरूकः स्वकार्ये यस्तत् सहायाश्च तत् समाः॥

जो अपने काम में ढीला है तो दूसरे क्यों न हों जो अपने काम में जागता है उसके सहायक वैसे हि हो जाते हैं

When one is slack in his work, how can others be otherwise? He who is awake in his business, has helpers like him.

यो जानात्यर्जितुं सम्यगर्जितं न हि रक्षितुम्।
नातः परतरो मूर्खो वृथा तस्यार्जनश्रमः॥

जो पैदा करना अछी तरह जानता है पर उसकी रक्षा करना नहि जानता इससे वडा मूर्ख कोई नहि उसके पैदा करने की मिहनत वेफायदा है

There is no greater fool than he who knows well how to earn, but not how to protect what is earned. His exertion in earning is vain.

पराधीनं नैव कुर्यात् तरुणीधनपुस्तकम्।
कृतं चेल् लभ्यते दैवाद् भ्रष्टं नष्टं विमर्दितम्॥

जवान स्त्री दौलत और पुस्तक दूसरे के आधीन न करै करने पर यदि भाग्य से फिर मिल जाय तो खराब टूटी विगडी हुई मिलती है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Never entrust a young woman, money, and a book to another. If done and got back by chance, they will be found spoiled, wasted, and smeared.

न भूषयत्यलंकारो न राज्यं न च पौरुषम् ।
न विद्या न धनं तादृग् यादृक् सौजन्यभूषणम् ॥

जेवर राज हिमत विद्या धन ऐसे शोभा नहि देते जैसी सुजनता वा सुशीलता

Neither a jewel, reign, courage, knowledge, nor wealth does so adorn a person as good character.

मूर्खः पुत्रो ऽथवा कन्या चण्डी भार्या दरिद्रता ।
नीचसेवा ऋणं नित्यं नैतत् षट्कं सुखाय च ॥

अपढ पुत्र वा पुत्री, लडोक स्त्री, ग़रीबी, नीच की नोकरी, सदा क़र्ज़ यह छः सुख देने वाले नहि

An ignorant son or daughter, termagent wife, poverty, service of a mean fellow, and constant debt, are six things that are not for one's ease.

वदेद् वृद्धानुकूलं यन् न बालसदृशं क्वचित् ।
परवेश्मगतस्तत् स्त्रीवीक्षणं न च कारयेत् ॥

बडों के मुआफिक बोलै, बालकों के मुआफिक कभी नहि, दूसरे के घर में जा कर वहां की स्त्रियों को न घूरै ।

Speak like old men, but never like a child. In another's house do not eye women there.

विद्या शौर्यं च दाक्ष्यं च बलं धैर्यं च पंचमम् ।
मित्राणि सहजान्याहुर्वर्त्तयन्ति हि तैर्बुधाः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इल्म वीरता कारीगरी ज़ोर और सबर ये पांच कुदरत से दोस्त हैं अक्लमन्द इनसे काम लेते हैं

Knowledge, bravery, dexterity, strength, and patience are five natural friends. The wise live with them

न सा सभा यत्र न सन्ति वृद्धाः
वृद्धा न ते ये न वदन्ति धर्मम् ।
धर्मः स नो यत्र न सत्यम् अस्ति
सत्यं न तत् यच् छलेनानुविद्धम् ॥

वह सभा नहि जिस में बुजुर्ग लोग नहि, वह बड़े नहि जो धर्म की बात नहि कहते, वह धर्म नहि जिस में सत्य नहि, वह सत्य नहि जिस में छल मिला है

It is no society in which there are no elders. They are not elders who do not speak what is righteous. It is no righteousness which has no truth. It is no truth which is mixed with a fraud.

निद्रा तंद्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता ।
एते सर्वथा हातव्या जनेन भूतिमिक्षता ॥

बहुत सोना गफलत डर गुस्सा सुसती बहुत मोह यह हमेशा छोड़ना चाहिये जो आदमी भलाई चाहता है ।

Excessive sleep, carelessness, timidity, anger, laziness, fondness, these should always be given up by a man desirous of his well-being.

प्रविचार्योत्तरं देयं सहसा न वदेत् क्वचित् ।
शत्रोरपि गुणा ग्राह्या गुरोस्तु त्याज्या दुर्गुणाः ॥

सोच कर जवाब देना चाहिये, कहीं इका इक न बोलना चाहिए, वैरी के गुण भी ले लेना चाहिए और दुर्गुण गुरु के भी छोड़ देना चाहिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

An answer should be given after thinking well, no where one should speak at once. Imitate the good qualities even of an enemy and reject the bad ones even of the teacher.

खादन् न गच्छेद् अध्वानं न च हास्येन भाषणम् ।
शोकं न कुर्यान् नष्टस्य स्वकृतेरपि जल्पनम् ॥

रास्ते चलते नहि खाना चाहिए और न ठट्ठे से बात करना । बरबाद हुए का शोक और अपने किए हुए की तारीफ न करना चाहिए

Do not go about eating. Don't talk laughing. Don't be sorry for what is lost. Don't prattle of your own good deeds.

अधमा धनमिच्छन्ति धनमानौ हि मध्यमाः ।
उत्तमा मानमिछन्ति मानो हि महतां धनम् ॥

छोटे लोग धन चाहते हैं। बीच के धन और इज़्ज़त दोनो चाहते हैं। अच्छे लोग इज़्ज़त वा आदर चाहते हैं क्योंकि बड़ो का धन इज़्ज़त है

The low long for wealth, the middling for wealth and honour, the high for honour, for honour is the wealth of the great.

वने ऽपि सिंहा न नमन्ति कर्णं
विभुक्षिताः स्वल्पनिरीक्षणं च ।
धनैर्विहीनाः सुकुलेषु जाता
न नीचकर्माणि समारभन्ते ॥

जंगल में शेर भूखे होने पर छोटे लोगों की वस्तु पर ध्यान नहि देते । अच्छे कुल में पैदा हुए लोग नीच काम नहि करते

Lions tho' hungry do not stoop to take what is insignificant. Tho' poor, men of good family never do a mean thing.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दुर्जनस्य हि संगेन सुजनोऽपि विनश्यति ।
प्रसन्नमपि पानीयं कर्दमैः कलुषीकृतम् ॥

बुरे के संग से अच्छा भी बिगड जाता है साफ पानी कीचड से मैला हो जाता है

Even a good man is spoiled by the company of a bad man; water, tho' clear, is made turbid with mire.

सद्भिः सततं वर्तेत सद्भिः कुर्वीत संगतिम् ।
सद्भिः संवादं मैत्रीं च नासद्भिः किंचिदाचरेत् ॥

नेकों के साथ वर्त्तना नेकों की सुहबत नेकों से बोल चाल और प्रीत करना चाहिए बुरों का साथ न करना चाहिए

A person should always deal with the good, keep company with the good, talk and make friends with the good; but he should have nothing to do with the bad.

वनेऽपि दोषाः प्रभवन्ति रागिणां
गृहेऽपि पंचेन्द्रियनिग्रहस्तपः ।
अकुत्सिते कर्मणि यः प्रवर्त्तते
निवृत्त रागस्य गृहं तपोवनम् ॥

दुनियांदार वन में भी एब करते हैं। घर में हवास खंसा को काबू में रखने की तपस्या हो सकती है। जो बुरे काम नहि करता और त्यागी है उसके लिये घर हि तपोवन वा इबादत गाह है।

The sensuous commit evils in a forest or retirement Penance by the subdu l of the five senses can be done even at nome. The nome is the place of retirement (peni-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

tential forest) for the unsensuous person who is engaged in a blameless work.

नराणां भूषणं विद्या गेहिनी गृहभूषणं ।
नभसो भूषणं चंद्रः शीलं सर्वस्य भूषणम् ॥

इल्म आदमियों का ज़ेवर है । स्त्री घर का ज़ेवर है । चांद आसमान का ज़ेवर है । और नम्रता वा खुश अख़लाक़ सब का ज़ेवर है ।

Knowledge is the ornament of men. The wife is the ornament of the home. The moon is the ornament of the sky. The ornament of all is good manners.

नाल्पायते हि सद्विद्या दीयमानापि वर्द्धते ।
कूपस्थमपि पानीयं भवत्येव वहूदकम् ॥

सच्ची विद्या देने से भी घटती नहि बढती है । कुए का पानी बडता हि रहता है

True knowledge does not decrease. It increases even on imparting. Water, tho' in a well, becomes plentiful (when drawn).

एकवृक्षे यथा रात्रौ नानापक्षिसमागमः ।
प्रभातेऽन्यदिशं यान्ति का तत्र परिदेवना ॥

रात को एक रूखपर बहुत से परंदे आजाते हैं भोर भए सब तरफ चले जाते हैं इस में क्यों रंज करना चाहिये ।

Many birds come together at night on a tree. They go away to different directions at daybreak. Why should there be lamentation ?

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि शौनक ।
अव्यक्तनिधनान्येव का तत्र परिदेवना ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हे शौनक उत्पन्न वस्तुओं का आरंभ नहि मालूम उन का मध्य मालूम है अन्त नहि मालूम तो क्यों शोच करना चाहिए

O Shounak, the origin of creatures is unknown, the middle of their existence is known, their end, too, is unknown. Why should there be lamentation for it ?

नाप्राप्तकालो म्रियते विद्धः शरशतैरपि ।
कुशाग्रेण तु संस्पृष्टः प्राप्तकालो न जीवति ॥

जिसका काल नहि आया वह नहि मरता चाहे सौ तीर क्यों न लगें और जिसका काल आपहुंचा है तिनके से छूने पर मरजाता है

One whose time of death has not come, does not die, tho' pierced with a hundered arrows. But one whose time of death is come, does not live, tho' touched with a blade of grass only.

भूतपूर्वं कृतं कर्म कर्तारमनु तिष्ठति ।
यथा धेनुसहस्रेषु वत्सो विन्दति मातरम् ॥

पहिले किये हुए करम का फल करने हारे को ऐसे पहुंचता है जैसे हजारों गौओं में वच्छा मां को पहिचान लेता है

An action, done before, follows its doer (in consequences), as a calf gets to its mother in the midst of thousands of cows.

सर्वं परवशं दुःखं सवमात्मवशं सुखं ।
एतद् विद्यात् समासेन लक्षणं सुखदुःखयोः॥

पराधीनता में दुःख स्वतंत्रता में सुख होता है यह संक्षेप से सुख दुख का अर्थ जानना चाहिए

All dependence is pain. All independence is pleasure. One should know this to be a definition of pleasure and pain in brief.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

न वायुमध्ये न समुद्रमध्ये
न पर्वतानां शिखरप्रदेशे ।
न मातृगर्भे न च दुर्गमध्ये
त्यक्तं क्षमः कर्म कृतं नरो हि ॥

हवा में समुद्र में पहाड़ की चोटी पर मां के पेट में या किले में आदमी किए हुए कर्म को नहि छोड सकता ।

Verily, man is not able to escape the consequences of a work done in the atmosphere, in the sea, on the summit of mountains, in the mother's womb.

सुखस्यानन्तरं दुःखं दुःखस्यानन्तरं सुखं ।
सुखं दुःखं मनुष्याणां चक्रवत् परिवर्त्तते ॥

सुख के पीछे दुःख दुःख के पीछे सुख होता है मनुष्य के गिर्द सुख दुःख चक्र से घूमते हैं ।

Pain comes after pleasure; pleasure after pain. The pleasure and pain of men go round and round like a wheel.

नाभिषेको न संस्कारः सिंयस्य क्रियते वने ।
नित्यमूर्जितसत्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥

जंगल में शेर का तिलक वा राजकी रसम नहि कीजाती, हमेशा बडी बुद्धि वाले को राजपद स्वभाव से मिलजाता है

Neither a coronation nor any ceremony is done to the lion in a forest. Kingship is naturally the lot of the lofty intellect.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वश्यः पुत्रोऽर्थकरी च विद्या
अरोगिता सज्जनसंगतिश्च ।
इष्टा च भार्या वशवर्त्तिनी च
दुःखस्य मूलोद्धरणानि पंच ॥

आज्ञाकारी लडका धन कमाने वाली विद्या तनदुरस्ती अच्छों की सुहबत मनमानी और आज्ञाकारी स्त्री यह पांच दुःख को दूर करने वाले हैं

An obedient son, profitable knowledge, health, the company of good men, a desirable and controlable wife are the five uprooters of pain.

कुरंग मातंग पतंग भृंगा
मीना हताः पंचभिरेव पंच ।
एकः प्रमाथी स कथं न घात्यो
यः सेवते पंचभिरेव पंच ॥

हिरन हाथी मच्छड भिनगा मछली यह पांच एक २ इन्द्रिय से गाफिल होकर मारे जाते हैं तो वह क्यों न मारा जावे जो पांच इन्द्रिय के वश में है

The deer, the elephant, the mosquito, the butterfly, the fish are five beings destroyed from slavery to one sense only. How can one be not destroyed, who is a slave of five senses ?

आयुः कीर्त्तिर्धनं विद्या बुद्धिर्भार्या निरोगता ।
बलं शीलं रूपं मित्रं संतानं च प्रभुप्रदम् ॥

उमर नामवरी दौलत इलम अकल स्त्री तनदुरसती ज़ोर भलापन खूबसूरती दोस्त लडकेवाले यह सब परमेश्वर की देनी है

Age, fame, wealth, knowledge, sense, the wife, health, strength, good temper, beauty, a friend, and an offspring are God's gifts.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्थिरं जीवितं लोके अस्थिरं धनयौवनम् ।
अस्थिरं पुत्रदाराद्यं धर्मः कीर्तिर्यशः स्थिरम् ॥

संसार में जीना धन जवानी स्त्री पुत्र आदि चले जाने वाले हैं पर धर्म नेकनामी (यश) सदा रहने वाले हैं

In the world, unstable is life, unstable are fortune and youth, unstable are sons, wives' &c.; but virtue, fame, and beneficence are stable or enduring.

अपहितहितविचारशून्यबुद्धेः
हितकरणे बहुविर्वितर्कितस्य ।
उदरभरणमात्रतुष्टबुद्धेः
पुरुषपशोः पशोश्च को विशेषः ॥

जिसको अच्छे बुरे का खयाल नहि अच्छा करने में बहुत हुज्जत करता है पेट भरने से खुश रहता है ऐसे मनुष्य और पशु में क्या भेद है

What is the difference between the beast and the human beast, having no sense to discern good and evil, raising many objections to doing good, intent only on satisfying the cry of the stomach?

नमन्ति फलिनो वृक्षा नमन्ति गुणिनो जनाः।
शुष्कवृक्षाश्च मूर्खाश्च भिद्यन्ते न नमन्ति च ॥

फलदार दरख़त झुकजाते हैं भले लोग झुकते हैं पर सूखा रूख और मूरख झुकते नहि बरबाद होजाते हैं

Fruit-laden trees bend, men of merits condescend or are obliging. Dry trees and ignorant men do not bend, they are broken down.

चित्तायत्तं धातुबद्धं शरीरं
चित्ते नष्टे धातवो यान्ति नाशम् ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तस्मात् चित्तं सर्वदा रक्षणीयं
स्वस्थे चित्ते धातवः संभवन्ति ॥

धातुओं अर्थात् रुधिर अस्थि मज्जा आदि से वना हुआ शरीर चित्त वा मन के आधीन है। चित्त के विगड़ जाने पर धातु भी विगड़ जाती हैं। अतएव चित्त की रक्षा सदा करना चाहिए चित्त में चैन होन से धातु वा शरीर वे अव यव पुष्ट रहते हैं।

The body made of tissues depends on the mind. The tissues waste away with the depression of the mind. Therefore the mind should always be guarded. The tissues develop when the mind is sound.

मायां विना महाद्रव्यं द्राङ् न संपाद्यते जनैः।
विना परस्वहरणान् न काश्चित् स्यात् महाधनः ॥

छल के वगैर वहुत दौलत जलदी नहि आदमी पैदा कर सकते। दूसरे के धन को लेने के विना कोई वड़ा दौलतमंद नहि होता।

Without fraudulence a great fortune is never at once got by men. Without cheating others of wealth, none becomes very rich.

स्वधर्मं परमं मत्वा परस्वहरणं नृपाः।
परस्परं महायुद्धं कृत्वा प्रणांस् त्यजन्त्यपि ॥

वादशाह लोग दूसरे के मालमत्ता को लेलेना अपना वड़ा धरम जानकर आपसमें वड़ी लड़ाई करके जान भी दे देते है।

Kings, thinking the seizure of others' property to be their great duty and fighting hard one another, sacrifice even their life (in the struggle).

अर्थस्य पुरुषो दासो दासस् त्वर्थो न कस्यचित्।
अतोऽर्थाय यतेतैव सर्वदा यत्नम् आथितः ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दौलत का आदमी गुलाम है। दौलत किसी की गुलाम नहि। इसलिए तरकीब के साथ हमेशा दौलत के लिए कोशिश करना चाहिए।

Man is a slave of wealth. Wealth is not a salve of anybody. So, man should ever try for wealth with care.

अतिदानतपः सत्ययोगो द्वारिद्रकृत् त्विह ।
धर्मार्थौ यत्र न स्यातां तद् वाक् कामं निरर्थकम् ॥

हद से बढकर खैरात तपस्या सचाई से धन जोडना दुनियां में तो गरीबी करने वाले हैं। जहां धरम अर्थात् नेकी और फायदा न हो वह बात बिलकुल निकम्मी है।

Too much charity and penance and truthfulness in making money are the causes of poverty in the world. That work or talk is of no use which is void of righteousness and benefit.

बुद्धिमन्तं सदा द्वेष्टि मोदते वञ्चकैः सह ।
स्वदुर्गुणं नैव वेत्ति स्वात्मनाशाय स नरः ॥

जो अकलमन्द से हमेशा दुषमनी करता है और ठगों के साथ खुश रहता है अपने बुरे लच्छन नहि जानता वह आदमी अपनी हि बरबादी करता है

That man ruins himself, who ever hates the wise and delights in the company of cheats, and who does not know his own faults.

नीतिं त्यक्त्वा वर्त्तते यः स्वतन्त्रः स हि दुःखभाक् ।
स्वतंत्रप्रभुसेवा तु ह्यसिधारावलेहनम् ॥

नीति वा नेक तरीक को छोड़कर मनमानी बात करने वाला आदमी तकलीफ उठाता है। खुद मुखत्यार मालिक की नौकरी तो तलवार की धार चाटना है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

He suffers trouble, who willfully acts without regard to justice or line of good work. The service of an absolute master is like licking the edge of a sword.

विना स्वधर्मं न सुखं स्वधर्मो हि परं तपः ।
तपः स्वधर्मरूपं यत् वार्द्धितं येन वै सदा ॥

अपना फर्ज पूरा किए बगैर आराम नहि होता । अपना काम करना हि बडी तपस्या है । जिस से यह काम वा फर्ज की तपस्या शरियाजत बढे वही हमेशा करो ।

There is no ease without the discharge of one's duty. One's duty is his great piety or penance; one should do the penance in the shape of his duty, so that he should ever prosper.

न जात्या ब्राह्मणश्चात्र क्षत्रियो वैश्य एव न ।
न शूद्रो न च वै म्लेच्छो भेदिता गुणकर्मभिः ॥

जन्म से न कोई ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और न शूद्र और न मलेच्छ होता है। गुण वा लक्षण और काम वा पेशा से ये भेद वा फरक किए गए हैं।

Neither the Brahmana, Kshatriya, Vaishya, nor even the Shudra, nor the outcaste is made by birth. Their distinction is made on the principle of qualifications and professions.

ब्रह्मणस्तु समुत्पन्नाः सर्वे ते किं नु ब्राह्मणाः ।
न वर्णतो न जनकाद् ब्राह्मतेजः प्रपद्यते ॥

ब्रह्म से तो-सब पैदा हुए हैं तो फिर वे ब्राह्मण क्यों नहि हैं । ब्राह्म तेज अर्थात् ब्राह्मण पन रंग वा पैदायश से नहि मिलता है ।

All people are born of the Brahman (Supreme Being). Then why should they not all be Brahmana? The quality of being a Brahmana is not got from colour or birth.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानकर्मोपासनाभिर्देवताराधनरतः ।
शान्तो दान्तो दयालुश्च ब्राह्मणश्च गुणैः कृतः ॥

विद्या अनुष्ठान इबादत से देवता के पूजन में मसरूफ साबिर हलीम रहीम गुणों से ब्राह्मण बनता है ।

The Brahmana is devoted to knowledge, religious works, prayer, and the worship of deities, contented, self-subdued, and kind; he is made so by virtue of his merits.

लोकसंरक्षणे दक्षः शूरो दान्तः पराक्रमी ।
दुष्टनिग्रहशीलो यः स वै क्षत्रिय उच्यते ॥

लोगों की हिफाजत में होशयार बहादुर इन्द्रियजीत (नफ़्सकुश) बुरों के रोकने में चतुर मनुष्य क्षत्रिय कहाता है ।

He is called a Kshatriya, who is expert in protecting the people, brave, self-controlled, valorous, dexterous in controlling the vicious.

क्रय-विक्रय-कुशला ये नित्यं पण्य-जीविनः ।
पशुरक्षाः कृषिकरास्ते वैश्यः कीर्तिता भुवि ॥

खरीदने बेचने में चतुर सौदागिरी से सदा गुज़ारा करने वाले डंगर रखने हारे खेती करने वाले लोग संसार में वैश्य कहलाते हैं ।

They are called the Vaishyas or merchants in the world, who are expert in buying and selling, always live by trading, tend cattle and till the ground.

द्विजसेवार्चनरताः शूराः शान्ता जितेन्द्रियाः ।
सीरकाष्ठतृणवहास्ते नीचाः शूद्रसंज्ञिकाः ॥

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य की नौकरी करनेहारे पूजा करने वाले बहादुर संतोषी इबाद पर क़ाबिज़ हल लकड़ी घास ढोने वाले छोटे काम करने हारे लोग शूद्र कहलाते हैं ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

Those low class people are called the Shudras or servants, who serve the twice-born—Brahmanas, Kshatriyas and Vaishyas—and are engaged in worship, brave, contented, with the senses under control, and who carry ploughs, fuel-wood and grass.

त्यक्तस्वधर्माचरणा निर्घृणाः परपीडकाः।
चण्डाश्च हिंसका नित्यं म्लेच्छास्ते ह्यविवेकिनः॥

अपना धर्म छोडने वाले बेरहम दूसरों को सताने हारे झगड़ालु वा तुन्दखू हमेशा हिंसा वा वध करने हारे बेतमीज लोग मलेच्छ कहाते हैं।

They are the Malechhas or outcastes, who have given up their religion and duties, feel no horror at vice, oppress others, are quarrelsome, ever cruel, and do not distinguish right from wrong.

दृग् अमात्यः सुहृच् छ्रोत्रं मुखं कोशो बलं मनः।
हस्तौ पादौ दुर्गराष्ट्रौ राज्यांगानि स्मृतानि हि॥

आंख वजीर कान दोस्त मुंह खजाना मन फौज हाथ किला पैर हुकूमत राज्य के जुज़ वा हिस्से गिने जाते हैं।

The eye is the minister, the ear the ally, the tongue (mouth) treasure, the will the army, the hands the fort, the feet the dominion; such are the organs of government.

यदि न स्यान् नरपतिः सम्यङ् नेता ततः प्रजा।
अकर्णधारा जलधौ विप्लवेतेह नौरिव॥

अगर लोगों का पालक (राजा) अच्छा सरदार न हो तो लोग बरबाद होजाते है जैसे खेवट के विना नाव समुद्र में डूब जाती है।

If the king is not a good leader, the subjects are ruined in the world, as a boat without a pilot sinks into the sea.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋणशेषं रोगशेषं शत्रुशेषं न रक्षयेत् ।
तत् कार्यं तु समर्थश्चेत् कुर्याद् वा कारयेत् च ॥

कर्ज़ बीमारी दुषमनों का वाकी मांदा (पीछे रहा) नहि रखना चाहिए। करने जोग काम को यदि कर सके तो करै वरना कराले।

The residue of debt, disease and the enemy should not be allowed to remain. What is worth doing, should be done, if one is able to do it, or else he should get it done by another.

आदौ कुलं परीक्षेत ततो विद्यां ततो वयः ।
शीलं धनं ततो रूपं देशं पश्चाद् विवाहयेत् ॥

पहिले (वर का) खानदान जांचै फिर इलम फिर उमर फिर स्वभाव दौलत खूब सूरती पीछे मुलक (जगह) पुंछके (लडकी की) शादी करै।

At first, inquire about the family, then about qualifications or knowledge, the age, disposition, wealth or property, the appearance, the country (of the bridegroom), and then if all is satisfactory, one should marry (or give away his daughter in marriage.)

विद्याधनं श्रेष्ठतरं तन्मूलमितरं द्धनम् ।
दानेन वर्धते नित्यं न भाराय न नीयते ॥

इलम की दौलत सब से अच्छी है। दूसरी प्रकार की दौलत इसी से कमाई जाती है। वह देने से वढती है। न भारी होती है। न कोई लेजा सकता है।

The wealth of knowledge is the best. It is the root of all other kinds of wealth. It always increases by giving it. It is neither heavy, nor is it taken away by anybody.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अस्ति यावत् तु सधनस्तावत् सर्वैस्तु सेव्यते ।
निर्धनँस्त्यज्यते भार्यापुत्राद्यैः सगुणोऽपि सः

जब तक मनुष्य धनी रहता है तब तक सब से आदर किया जाता है। बिना धनवाले को गुणी होने पर भी औरत लडके वगैरः छोड देते हैं।

As long as a man has wealth, he is respected by all; but, deprived of his wealth, he is abandoned by his wife, &c. sons altho' possessed of other qualifications.

क्षणशः कणश्चैव विद्यामर्थं सुसाधयेत् ।
न त्याज्यौ तु क्षणकणौ नित्यं विद्याधनार्थिना ॥

हर लिहमा और थोडी सी भी विद्यारूपी दौलत अच्छी तरह हासिल करना चाहिए। लिहमा और कनका भी विद्या धन चाहने वाले को न खाना चाहिए।

The wealth of knowledge should be well acquired every moment little by little. A moment and modicum are not to be wasted by a candidate of the wealth of knowledge.

असत्यता निष्ठुरता कृतज्ञता
भयं प्रमादो ऽलसता विषादिता ।
वृथाभिमानो ह्यति दीर्घसूत्रता
तथाङ्गनाक्षादि विनाशनं श्रियः ॥

झूठ बेरहमी नाशुकर गुजारी डर गफलत सुसती झगडा झूठा गर्व बहुत काहिली बेश्यागमन जुआ आदि दौलत के बरबाद करने वाले हैं।

Falsehood, cruelty, ingratitude, fear, carelessness, indolence, quarrel, pride, sloth, adultery, gambling, &c. are the destroyers of wealth.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज्ञानमुत्पद्यते पुसां क्षयात् पापस्य कर्मणः ।
यथादर्शतले पूरुये पश्यत्यात्मानमात्मनि ॥

पाप कर्म के छय से लोगों को ज्ञान होता है जैसे दर्पण में वेसे अपने में परम अत्मा को मनुष्य देखता है ।

Wisdom of men arises from the destruction of sin. Then he sees the Spirit in himself, as it were, in a mirror.

पूसृतैरिन्द्रियैर्दुःखी तैरेव नियतैः सुखी ।
तस्मादिन्द्रियरूपेभ्यो यच्छेदात्मानमात्मना ॥

इन्द्रियों के साथ चलने से जीव दुःखी होता है और उनको काबू में रखने से सुखी । इसलिए इन्द्रियों के विषयों से अपने को आत्मा के बलसे रोको ।

A person suffers by going after the senses, and gets joy by controlling them. Therefore restrain thyself by the power of the Spirit from the temptations of the senses.

इन्द्रियेभ्यो मनः पूर्वं बुद्धिः परतरा ततः ।
बुद्धेः परतरं ज्ञानं ज्ञानात् परतरं महत् ॥

इन्द्रियों से मन आगे है, उससे आगे बुद्धि है, बुद्धि से आगे ज्ञान और ज्ञान से परे महत् अर्थात् वडा (ईश्वर) है ।

The will is beyond the senses; the intellect is beyond the will; wisdom is beyond the intellect. The Great (God) is beyond wisdom.

अव्यक्तात् पूसृतं ज्ञानं ततो बुद्धिस्ततो मनः ।
मनः श्रौत्रादिभिर्युक्तं शब्दादीन् साधु पश्यति ॥

अदृश्य से ज्ञान निकला उस से बुद्धि और बुद्धि से मन । मन कान आदि इन्द्रियों से मिलके शब्द आदि विषय अच्छी तरह देखता है ।

Wisdom proceeds from the luvisible; from wisdom, the intellect; from the intellecet, the will. The will united to the senses, hearing, &c., perceives objects, sound, &c.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यस्ताँस्त्यजति शब्दादीन् सर्वांश्च व्यक्तयस्तथा ।
विमुञ्चेत् प्राकृतान् ग्रामाँस्तान् मुक्त्वामृतमश्नुते

वह जो उन शब्द आदि सब दृश्यों को त्यागता है और संसारिक पदार्थों को छोडता है, अमर पद को प्राप्त होता है ।

He who forsakes all those perceptible sounds and other material objects, becomes immortal thereby.

गावो घ्राणेन पश्यन्ति वेदैः पश्यन्ति पण्डिताः ।
चारैः पश्यन्ति राजानश् चक्षुभ्याम् इतरे जनाः ॥

पशु नाक द्वारा देखते हैं । पण्डित लोग वेद (विद्या) द्वारा वस्तुओं को देखते वा जानते हैं । राजा लोग नोकरों के वसीले जानते है । अन्य लोग आंखों से देखते हैं ।

Animals (cows) see (know) with the nose. Wise men see with the Vedas (system of knowledge). Kings see through servants. Other people see with the eyes.

वृहत्याः पतिः केवलः सेवनीयः
मनुष्यैः सदावेदमंत्रैः परोक्षैः ।
तदर्थे ऽचलं शुद्धचितं लागित्वा
मनःसत्यभावेन भक्त्या महत्या ॥

आदमियों को उचित है कि ज़मीन आस्मान के मालिक की हि वन्दगी हमेशा परेकी वात वतलाने वाले वेदमंत्रों से उन के अर्थ पर स्वच्छ चित्त एकत्र करके मन के सच्चे विश्वास और वडी भक्ति से किया करें ।

Men should pray to God alone, the Lord of the heaven and earth, always with the Vedic verses which are concerned with the beyond, by rivetting the sincere mind on their import with true hearty faith and great devotion.

ओंशम्

मंगलं भगवान् विष्णुः मंगलं जीवजन्तवः
मंगलं च विधीता येन सुखं महद् भवेत्

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शब्दार्थः Glossary.

अ

आश्रयः refuge import सहारा
अत्यन्तं very much बहुत
आयुः age उमर
अग्निहोत्रं fire sacrifice हवन
अन्यः other दूसरा
अ (in compound) not
अप्रियस्य of unpleasant कठोर का
अथवा or या
अयं this यह
आहुः say कहते हैं
अरण्यं a forest जंगल
अपराधः a fault कसूर
अचिंतनीयः not worth thinking
विचारने के योग्य नहि
अपथ्यं unwholesome बुरा
अनृतं untruth झूठ
आत्मा the soul रूह
अन्ते at end आखिर को
अपि even भी
आल्हादितं delighted खुश
अध्ययने in study पढने में
आधीनं dependent भरोसे
अस्ति is है
अर्थः interest, meaning,
wealth हित, मायनी, धन
आशा; hope उम्मेद

अन्यथा reverse दूसरी तरह, उलटा
अत्र here यहां
अपकारिषु in malefactors
बुरा करने वालों में
आप्तैः by the saints आप् to get,
असकृत् at once इकायक
अर्जितुं to earn अर्ज् to earn
पैदा करना
अतः from him, or it, hence
तः is added to nouns to form
adverbs as ग्रामतः from a
village.
अनुविद्धं mixed मिलाहुआ
अधमः low नीच
अव्यक्तः invisible अदृष्ट
अनन्तरं after पीछे
अस्थिरं unstable चलायमान
अमात्यः a minister वजीर
असिः a sword तलवार
अवलेहन licking चाटना
आराधनं worship पूजना
अध्वा road रस्ता २ नोक
अग्रं the fore end before आगे
अनन्तर after पीछे २ ling राजातिलक
अभिषेकः coronation (lit.sprink)

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आयत्तः dependent भरोसे
आस्थितः standing upon ठहरकर
अति too much बहुत हि

इ

इति so much (quotation) ऐसा
इन् a possessor as देहिन् a possessor of the body
ईदृशी like this ऐसी
इच्छत् desiring चाहना
अत् is added to roots to form the present participle of the parasmaipada verbs

उ

उपदेशः teaching सिखाना
उद्योगिनं to an energetic man उद्मी
उपैति reaches इ to go आती है
उद्यमः an effort कोशिश
उपकारिषु in benefactors भला करने वालों में
उच्यते is said वच् to speak कहलाता है
उदरः the belly पेट

ए

एकेन by one एक से
एव even भी (for emphasis)
एतानि these ये
एतत् this यह
एवं this way, thus इसप्रकार
एतान् these वह

क

कथं how क्यों कर
कर्मणः of a work कर्मन् work
कालः time समय
कथंचन ever कभी भी
कामः desire चाहने वाला
काकः a crow कौवा
कारः a doer करने वाला
क्लीवः a eunuch नामरद a weak man कमजोर
करुणा mercy दया
केन by whom किसने
कोपः anger गुस्सा
केवलं only सिरफ
कंदैः roots जड़ों से
कृत्वा having done कर के
त्वा added to roots makes the perfect participle.
कर्दमं mire कीचड़
कन्या a girl लडकी
कलुषः turbid गंदला

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कर्णधार: a pilot खेवट
कुर्यात् should do करै कृ to do
किं what क्या
करिष्यति will do करैगा
कुलं a family घर
कर्तव्यः to be done करने जोग
काले in time समय में
करोति does करता है
क्रमशः by and by धीरे २ चूडा
कंकणेन by a bracelet कंगनसे
कार्यं work काम
कु bad बुरा (in comp.)
कर्तुं to do करना
का small छोटा (in comp.)
कृत्व do कर
कृतं done किया गया
कः who कोन

ख

खलु verly (for .emphasis) भी

ग

गतं gone गया
गच्छति goes जाता है
गम् to go गच्छ्
गृहं a house घर
गुणः a merit सिफत
गर्भस्थः one in the womb पेटमें
गर्भः a womb स्था to be.
गजः an elephant हाथी
गमयन्ति pass बिताते हैं
गम्यते is gone or reached
य added to roots makes a passive voice whic htakes atmane had terminations.
गृहणी the wife,house mistrees. घरवाली
ग्राह्यः worth taking लेने योग्य

घ

घटः a pitcher घडा
घात्या killable मारने योग्य

च

च and और
चन्द्रेन by the moon चांदसे
चंदनं sandal wood चंदन
चित्तं the mind मन
चरित्रं conduct चाल
चिंता thinking सोचना
चिरं long बहुत

छ

छित्वा having cut काटकर
छिन्द् to cut

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ज

जपः muttering सिमरण
जलं water पानी
जन्तुः a animal जानवर
जीवितं life जीना
जागरूकः wakeful होशयार
जलधिः a sea समुंदर

त

तावद् ? so long till then तवतक
त्रिषु in three तीन में
तिस्रः three तीन
तस्य his उसका
तु but तो
त्यजेत् may leave छोडा
त्यज् to leave छोडना
तादृशः like it उसजैसा दृश (in compound) like
तप्तं hot गरम
तीरे on a bank किनारे
तालिका a clap ताली
यक्तः left out छोडा हुआ
तत्वं an essence, element गूढवस्तु
ते they वे
तृणं grass घास
तुल्यः equal बराबर
तत् it वह
तस्करः a thief चोर
तीव्रः fierce तेज़

तरुणी a young woman जवानस्त्री
तपोवनं a hermitage तपः asceticism तपस्या & वनं a forest
तुष्टः contented खुश

द

दूरतः far दूर
दाराः the wife भार्या
दानं charity खैरात
दर्पणं a mirror आईना
दुष्टा wicked बुरा
दुश bad बुरा
दैवं luck नसीब chance
दोषः a fault ऐब, तकसीर
द्यूतकारः a gambler
द्यूतं gambling
दृष्टं seen दृश् to see देखना
दीयते is given दा to give
दृष्टवा having seen
देहिनः of the possessor the body
देही a man, देहः the body बदन
दत्तं given दिया
दुर्बलः weak दुबला २ to obtain
दुर्लभः difficult कठिन दुर् bad लभ्
दारिद्रं poverty गरीबी
दुखं pain दरद
देया given (givable) देनेयोग्य
देष्टि hates नफरत करता है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

दर्पयति is proud घमंड करना
दंभः arrogance fraud धोखा शेखी
दीर्घसूत्रता sloth सुस्ती
द्राङ् quickly जल्दी

ध

धने in wealth दौलत में
धर्मस्य of religion धर्मकी
धैर्यं patience धीरज
धन्यः lucky नसीब वाला
धातुः a tissue, a metal धात अंग
धारा an edge धार

न

न not नहि
निपातेन by falling गिरने से
पत् to fall
निहत्य having given up छोडकर
हा to abandon
नदी a river दरिया
निवृतिः a relief आराम
निधनं death मौत an end अन्त
निधानं stay ठहराव
निधिः treasure धन
नरकं hell दोज़ख़
नरः a man मनुष्य
निहन्ति kills मारती है
नभः the sky अकाश
निरीक्षणं seeing देखना
निवृत्तः free from त्यक्त
नाना many बहुत

प

प्राणः life जान
पुत्रेण by a son लडके से
परः great, other, beyond दूसरा
पुसां of men आदमियों का
प्राज्ञा the sense अकल
पूर्यते is filled भरता है पृ to fill
पाणिः a hand हाथ
पुरः before पहिले
परोक्षे behind, beyond परे
पानीयं water पानी
पुनः again फिर
पुरुषः a man आदमी
पौरषं courage ज़ुरत विशto enter
प्रविशन्ति enter दाखिल होते हैं
प्रपद्यते is done होता है
परित्यक्तः abandoned परि altogether त्यज् to abandon, छोडाहुआ
दृश्यसेदृश्to seeदेखो pervade,
प्राप्तं got पाया, आप् to get,
प्रणाशः death, ruin बरबादी
पतंगः a moth भिनगा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

प्रकोपः anger बडाक्रोध
पानं drink पीना, पा to drink
प्रीतिः love, friendship प्रेम
प्र great, much (in comp)
पंच five पांच
पिवन्ति drink पीते हैं पा to drink
(पिव) to protect घायल
पण्यं trade वंज
पानीयं water पानी
पक्षिन् a bird परन्द
परिदेवन lamentation शोक
प्रासकालः one whose time of death is come मरने वाला
प्रमाथी careless गाफिल

फ

फलं a fruit नतीजा, फल

ब

वृद्धः old बूढा
बुध्या by the intellect अकल से
बुध् to know जानना
बध्यते is bound or prevented
बध् to bind बांधना रुकता
व्यक्तं plain, clear जाहिर
ब्रूते says कहता है
बुधः a wise man बुद्धिमान्
बलिं offering, tax दान, कर, भोजन
वृथा in vain वे फायदा
वंञ्चकः a cheat ठग
बलं an army फौज

म

भोजने in food खाने में
भार्या the wife स्त्री
भाति to appears भा appear
भोज्यं eating or eatable खाने का
भुज् to enjoy भोगना, खाना
भाजनं a vessel लायक, पात्र
भूतिः prosperity भलाई
भुजङ्गः a serpent सांप
भवेत् may be भू (भव्) to be
भवन्ति become, are होते हैं
भयः fear डर, भी to fear डरना
भुवि on the earth धरती पर
भद्रं good अच्छा
भुक् eater खाने वाला
भग्नः broken टूटा हुआ
भुंक्ते eats खाता है
भाषणं speech बोलना
भूषणं an ornament जेवर
भृंगः a butterfly तितली
भाक् an eater भागी
भज् to serve, to break

म

मृत्युः death मौत
मृता dead मृ to die मरना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मानं respect आदर
मुक्तिः salvation निजात
मंडनं ornamentation सजावट
मिथ्या false झूठा
मित्रं a friend दोस्त ‹ मनशा
मनोर्थाः willing, objects सोचना
मुखं mouth मुंह
मान् possessed of वाला मत् मन्तः
added to nouns as श्रीमत्
मर्दितं spoiled बिगडा ‹ इच्छा चित्त
मनसा by the will मनस् will
मद्यपः a drinker मद्यं wine
and पा to drink
मांसभुक्षु in flesh eaters मांसं flesh
भुज् to eat or eater
मूर्खः an ignorant man जाहिल
मातरं to the mother मां को
मातृ or माता the mother
मुनिः a thinker ऋषि, मन् to think
मतं thought माना जाता
मर्म a secret भेद
मौनत्वं silence चुप
मेधा the sense, intellect बुद्धि
मैत्री friendship दोस्ती
मृगः a deer, an animal हिरण, पशु

मातंगः an elephant हाथी
मीनः a fish मच्छी

य

यावत् as long as जबतक
युक्तः united युज् to join
यथा as जैसे
यस्य whose जिसका
यत्नं a plan तदबीर
यदि if अगर
यः who जो
यशः glory नामवरी
यशसा with glory जस नाम से
यस्मात् therefore, from which
इस लिए
याति goes या to go जाता है
यत् which जो

र

राजा a king बादशाह
रतिः pleasure खुशी
रिपुः an enemy दुशमन
रुधिरं blood लहु
रताः engaged लगेहुए रम् to
be engaged
रोगः a disease बीमारी
रक्षन्ति protect रखाते हैं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रुदितं weeping रोना
रोचते pleases अच्छा लगता है
रुच् to please
रक्षितुं to protect रखाना fron रक्ष् to protect तुम् is added to verbs to form the Infinitive Mood,

ल

लोचनं the eye आंख
लगेत् may incline to लग् to be engaged लगे
लक्ष्मीः wealth दौलत ≺ दुनियां
लोकः people ? the world सोग
लोभः avarice लालच

व

विद्या knowledge इल्म
विडंवना trouble खरावी
विहीनस्य deprived of
विंदुः a drop बूंद
विनीतः polite नी to lead of
वदन्ति say कहते हैं, वद् to say
वासः living रहना, वस् to dwell
वशात् from effect or influence असर से, वशः control
विना without वगैर
वक्त्रं a mouth मुंह
विश् to enter
विचारितं thought out from चर् to go with वि
वलीयस् stronger जोरावर
वलं strength with ईयस्
विरोधः hostility लडाई रुध् to oppose ≺ चाहने
वांछेत् may desire वांछ् to desire
वृत्तिः effort, livelihood काम, गति
वा or, and या और
विषं poison जिहर
वर्द्धनं an increaser वढती, वृध् to increase
वत्सः a calf वच्छा
वित्तं wealth धन
वनं a forest जंगल
वलिनः strong जोरावर
वरः best अच्छा
विभूषणं an ornament जेवर
वादिनः speakers वोलने वाले
वक्ता a speaker वोलने वाला
वृक्षः a tree दरखत
व्रतं a vow प्रतिज्ञा
वंधनं a bond फंदा
व्यसनं luxury शौक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वल्मीक a white ant दीमक
वत् like जैसा It added to nouns
वपु: the body बदन
वय: age उमर
विचिंत्य having thought सोचकर
वेति knows जानता है
विषय: luxury शोक
विक्रम: valor बहादुरी
विज्ञानं knowledge इल्म
वेश्म a palace मकान
वीक्षणं eyeing, seeing देखना
बहु much बहुत
विन्दति knows जानता है
विद् to know
विशेष: a difference फरक
वञ्चक: a cheat ठग
वर्णत: from color रंग से
त: is an adverb suffix.

श

शर्वरी a night रात्रि:
शास्त्रं a scripture, book किताब
शुद्धि: cleanliness सफाई
शक्यते can be शक् to be able.
शीतता coldness ठंडापन
शक्ति: power बल से
शौचं scleanlines
शान्ति: calmness peace चुप खमोशी
श्रुतं heard सुना श्रु to hear श्रु
शीलवृत्ता: modest, polite सभ्य
शुष्क: dry सूखा
शीलं modesty दया
श्रोता a hearer सुननेवाला
शेषं the rest, end बाकी
श्री: riches दौलत
शिथिलं: slack ढीला
श्रम: labour मिहनत
शोक: grief रंज

स

स्वस्थ: healthy चंगा
सु good अच्छा
साधुना by a virtuous man भले से
सर्व all सब
संतोष: contentment सबर
स्व own अपना
स्वयं self अपनी
स: he वह
स्नानं a bath नहाना
सदा always हमेशा
स्वभाव: nature खासियत
सिंह: a lionशेर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिध्यति is done होता है
सिध् to accomplish
सुप्तः slept सोए हुए
संगता accompanied साथ
स with साथ
सर्पः a snake सांप
स्यात् may be होवे
साधुत्वं piety भलमनसी
सद्भिः by the good अच्छों से
सं well भली प्रकार
स्मृतं remembered स्मृ to remember याद करना
सुहृद्भिः by friends दोस्तों से
सत्यं truth सचाई
सृज् to create सृज्यन्ते are created घडे जाते हैं
समः equal बराबर
सुलभः easy to obtain आसान
सततं always सदा
स्वर्गः heaven वैकुंठ
सनाथता wardship
स with नाथः a guardian, lord ता ness
संतापयन्ति afflict सताते हैं
स्थातव्यं should be stayed ठहरने योग्य
सौहृदं friendship दोस्ती
सहायः a helper, help मददगार मदद
सौजन्यं politeness सभ्यता
सहजः natural स्वभाविक
समासः in brief संक्षेप
सीरः a plow हल
स्वल्पः small थोडा
संवादः talk बोलना
समागमः assembling मेल
संस्कारः a ceremony रसम
सत्वं intellect बुद्धि
संतानं a child लडका
सदा ever हमेशा
सम्यक् good अच्छा

ह

हि very (for emphasis) ही
हितं for benefit लिए, भलाई
हस्तं a hand हाथ
हेतुः a cause कारण
हतः killed मरा हन् to kill
हीनः deprived of हि to send खाली
हिनस्ति injures सताता है
हत्वा having killed मारकर
हरणं taking लेना हृ to take
हास्येन by joking हंसी से

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

क्ष

क्षेत्रं a field खेत

क्षीरं milk दूध

क्षयः stoppage, disappearance

क्षणं a moment लहिमा

क्षमः able लायक

क्षयः destruction नाश

ज्ञ

ज्ञानं wisdom, knowledge अकल

ज्ञः knower जानने वाला It is added to abstract nouns to make an agent thereof

विरजानन्द यन्त्रालय लाहौर में विक्रयार्थ पुस्तक

वेदपाठावलिः

प्रथम वेद पुस्तक	...	-)
द्वितीय ,,	...	-)॥
तृतीय ,,	...	=)
चतुर्थ ,,	...	=)॥
पञ्चम ,,	...	।)
षष्ठम ,,	...	।-)
सप्तम ,,	...	।=)
सातो वेद पुस्तक जिल्ददार		॥।)
सरल संस्कृत व्याकर्ण छप रहा है		
हिंदी व्याकरण	...	)॥
ऋगवेद संहिता	...	२॥)
सामवेद ,,	...	१॥)
यजुर्वेद ,,	...	१॥)
अथर्व वेद ,,	...	१॥)
चारों वेद एक वा दो जिल्दों में		५)

संस्कृतपाठावलि :

शतपथ कांड प्रथम	...	।)
,, द्वितीय	...	।)
,, तृतीय	...	।)
मांडूक्य उपनिषत् पण्डित गुरुदत्त कृत व्याख्या सहित		।)
संस्कृत व्याख्यान स्वामी अच्युतानन्द का	...	)।
ईषोपनिषद मूल्य	...	)।
सांख्य दर्शन ,,	...	=)
भर्तृहरि नीतिशतक	...	-)
,, वैराग ,,	...	-)

हिंदीपाठावलि :

प्रथम भाषा पुस्तक	...	)॥
,, द्वितीय	...	-)
ऋतुचर्या पण्डित खून्नीलालशास्त्री कृत पठन पारिपाटी में यह हिंदी की तीसरी पुस्तक है	...	-)॥
पुराण किसने बनाये	...	)।
साधुओं की करतूत		-)

डाकव्यय जुदा है

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www. kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

THE HARBINGER, LAHORE,

is a Fortnightly paper, containing original articles on Religion, excerpts from English Vegetarian and Spiritual Magazines, and the important news of the day. Annual subscription Rs 2. Specimen copy 2 annas.

Apply to—*The Editor, Harbinger, Lahore.*

——o:——

THE MANGAL SAMACHAR, LAHORE,

is a Fortnightly paper, containing a Sanscrit article with its translation and other articles in Hindi and Urdu with the news of the day. Annual subscription Rs. 1-8-0. Specimen copy 1 anna.

Apply to—*The Editor, Harbinger, Lahore.*

——:o:——

A LITERAL ENGLISH TRANSLATION.

OF

The 4 Vedas with the Text and necessary Notes and Explanation is being issued in parts of 100 pages each @ Rs 1-2-0 by a V. P. P. and to be had from

The Editor, Harbinger, Lahore.

For Private And Personal Use Only